अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

जितना लाभ, उतना लोभः शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण

-एर्नाकुलम जिले में गतिमान अहिंसा यात्रा पहुंची अलुवा स्थित श्री दत्ता आंजनेय क्षेत्रम

-सूर्य का प्रखर आतप के बीच महातपस्वी ने किया लगभग बारह किलोमीटर का विहार

-लोभ को नियंत्रित करने और उसे क्षीण करने को आचार्यश्री ने किया उत्प्रेरित

-मंदिर के पुजारी ने आचार्यश्री के स्वागत में दी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति

28.02.2019 अलुवा, एर्नाकुलम (केरल): आदमी के भीतर अनेक वृत्तियां होती हैं। आदमी को कभी गुस्सा आ जाता है तो आदमी कभी अहंकार में चला जाता है। आदमी कभी माया के वशीभूत हो जाता है तो कभी लोभ में चला जाता है। लोभ को सभी वृत्तियों का बाप कहा जाता है। क्योंकि लोभ के कारण ही आदमी हिंसा में भी जा सकता है, झूठ भी बोल सकता है और चोरी भी कर सकता है। आदमी को जितना ही लाभ होता है, उतना ही लोभ बढ़ता चला जाता है। आदमी को अति लोभ से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को इच्छा परिमाण व्रत का स्वीकरण कर लोभ को नियंत्रित करने अथवा उसे क्षीण करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन को नई दिशा देने वाली उक्त ज्ञान की बातें गुरुवार को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अलुवा स्थित श्री दत्ता आंजनेय क्षेत्रम मंदिर परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं को बताईं।

अपनी अहिंसा यात्रा के साथ केरल की धरती पर गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुवार को प्रातः अंगमाली स्थित डाॅन बोस्को जूनियर स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। आचार्यश्री की केरल यात्रा के प्रारम्भ से आतप बरसाने वाला सूर्य आज भी अपनी किरणों से धरती को तप्त बना रहा था, किन्तु समताभावी आचार्यश्री अपने गंतव्य की ओर निरंतर गतिमान थे। लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के साथ अलुवा स्थित प्रसिद्ध श्री दत्ता आंजनेय क्षेत्रम मंदिर परिसर में पधारे। मंदिर के मुख्य पुजारी द्वारा आचार्यश्री का हार्दिक अभिनन्दन-स्वागत किया गया।

मंदिर परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रेरक कथानकों के माध्यम से लोगों को लोभ से बचने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि साधना के क्षेत्र में लोभ सबसे अंतिम में जाने वाला कषाय है। इच्छाएं आकाश के समान होती हैं। इसलिए आदमी को लोभ से बचने का प्रयास करना चाहिए। लोभ से बचने के लिए आदमी को इच्छा परिमाण व्रत का स्वीकरण कर अपनी बढ़ती उम्र के साथ अपनी इच्छाओं का, परिग्रहों का परित्याग अथवा अल्पीकरण करने का प्रयास करना चाहिए। एक आयु सीमा के बाद आदमी को स्वतः ही परिग्रहों का अल्पीकरण करने का प्रयास करना चाहिए। परिग्रह की अल्पता से आदमी की आत्मा निर्मल बन सकती है। परिग्रह से पूर्ण व्यक्ति की आत्मा निर्मलता को नहीं प्राप्त कर सकती। परिग्रह से आत्मा मलिन बनती है। आदमी को परिग्रहों के अल्पीकण के लिए आदमी को अपनी इच्छाओं का सीमाकरण करने का प्रयास करना चाहिए। इच्छाओं का सीमाकरण हो जाए तो मूल्यों के हिसाब से परिग्रहों को कम करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त मंदिर के मुख्य पुजारी श्री मारुति कुमार शर्मा ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि दूषित हो रही दुनिया को सन्मार्ग दिखाने के लिए आप जैसे महान संतों की परम आवश्यकता है। आपकी अहिंसा यात्रा के दौरान मंगलवाणी का श्रवण करने से लोगों का अवश्य कल्याण हो सकता है और वे बढ़ती जा रही हिंसा, दुराग्रह, आपसी भेदभाव और द्वेष को समाप्त किया जा सकता है। आप जैसे संतों की केरल में बहुत आवश्यकता है, इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप केरल में बार-बार पधारें।